Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान

सामान्य अध्ययन

इतिहास

एवं कला संस्कृति

SIERRA
INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	1
2	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	10
3	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति	19
4	मेवाड़ का इतिहास	21
5	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	34
6	गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश	45
7	चौहानों का इतिहास	49
8	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	58
9	जैसलमेर का भाटी वंश	67
10	करौली–भरतपुर का इतिहास	69
11	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	72
12	राजस्थान में किसान आंदोलन	79
13	राजस्थान की प्रशासन और राजस्व व्यवस्था	86
14	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	90
15	प्रजामंडल आंदोलन	97
16	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	104
17	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	111
18	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	115
19	राजस्थान की चित्रकला	123
20	राजस्थान की हस्तशिल्प कला	131
21	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	136
22	राजस्थान के लोक संगीत और वाद्य यंत्र	139
23	राजस्थान के लोक नृत्य	149

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान के लोक नाट्य	153
25	राजस्थान का साहित्य	156
26	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	162
27	राजस्थान के मेले और त्योहार	172
28	राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा	182
29	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	184
30	राजस्थान के प्रमुख रीति–रिवाज एवं प्रथाएँ	199

1 CHAPTER राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

- राजस्थान इतिहास के जनक - कर्नल जेम्स टॉड को कहा जाता है।
  - ✓ वे वर्ष 1818 से 1821 ई. के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत के एजेन्ट थे।
  - ✓ उन्हें घोडे वाले बाबा कहते थे।
  - ✓ राजस्थान के इतिहास के बारे में लिखी इनकी पुस्तक एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान लन्दन में वर्ष 1829 में प्रकाशित हुई ।
  - ✓ गौरी शंकर हीराचन्द ओझा द्वारा इस पुस्तक का सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद।
  - ✓ अन्य पुस्तक - ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया
  - ✓ मृत्यु पश्चात वर्ष 1837 में पत्नी द्वारा प्रकाशन ।
- राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य सर्वप्रथम (1871 ई) प्रारम्भ करने का श्रेय ए.सी.एल. कार्लाइल को जाता है I

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

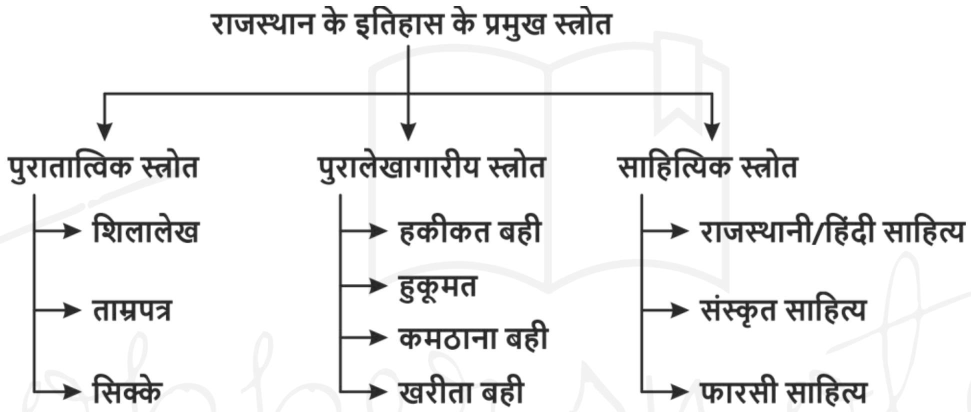

शिलालेख

रायसिंह प्रशस्ति (बीकानेर 1594 ई. में)	➢ प्रशस्तिकार- जैन मुनि जैता। ➢ इसमें राव बीका से लेकर राव रायसिंह तक के बीकानेर के विभिन्न शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है । ➢ इसके अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी, 1589 से 1594 ई. तक राव रायसिंह ने अपने मंत्री करमचंद द्वारा पूरा करवाया था।
मंडोर अभिलेख (685 ई में जोधपुर)	➢ यह गुर्जर नरेश बाउक की प्रशस्ति है। ➢ इस में गुर्जर प्रतिहारों की वंशावली, विष्णु एवं शिव पूजा का उल्लेख किया गया है।
सच्चिका माता मंदिर प्रशस्ति (1179 ई. ओसिया, जोधपुर)	➢ सच्चियाय माता के मंदिर, में उत्कीर्ण किया गया है। ➢ इसमें कल्हण को महाराजा एवं कीर्तिपाल को मांडव्यपुर का अधिपति बताया गया है एवं धारावर्ष को विजयी बताया गया है।
बिजौलिया शिलालेख (1170 ई., भीलवाड़ा)	➢ 1170 ई. में इसे बिजौलिया के पार्श्वनाथ मन्दिर परिसर की एक बड़ी चट्टान पर संस्कृत में उत्कीर्ण किया गया। ➢ इस अभिलेख की स्थापना जैन **श्रावक लोलक द्वारा** कराई गई थी तथा इसके लेखक **कायस्थ केशव** थे। ➢ रचयिता- गुणभद्र।

	➢ इसमें चौहानों को वत्सगोत्रीय ब्राह्मण (डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार) बताते हुए वंशावली दी गई है। ➢ चौहान राजा सोमेश्वर के शासन काल में | ➢ इसमें जाबालिपुर (जालौर), शाकम्भरी, श्रीमाल जैसे प्राचीन नगरों का उल्लेख है। ➢ इस अभिलेख में उल्लेख है कि चौहानों के मूलपुरुष वासुदेव चौहान ने 551 AD के लगभग शाकंभरी में चाहमान (चौहान) वंश के राज्य की स्थापना की एवं सांभर झील बनवाई थी। साथ ही यह भी बताया गया है कि वासुदेव ने अहिछत्रपुर (नागौर) को अपनी राजधानी बनाया था।
घटियाला अभिलेख (861 ई. जोधपुर)	➢ रचयिता – मग जाति के ब्राह्मण ➢ उत्कीणकर्ता – स्वर्णकार कृष्णेश्वर ➢ प्रतिहार राजा – कक्कुक ➢ साल माता जैन मंदिर मंडोर (जोधपुर) में स्थित ➢ भाषा – संस्कृत ➢ हरिश्चंद्र के चार पुत्रों भोगभट, कक्कुक, रज्जिल और दह का उल्लेख मिलता है
बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई. सिरोही)	➢ यह बसंतगढ़ (सिरोही) के जगन्माता मंदिर क्षेमकरी (खिमेल) माता मंदिर से प्राप्त हुआ है। ➢ यह लेख राजा वर्मलात के समय का है। ➢ इस लेख में राज्जिल, जो वज्रभट (सत्याश्रय) का पुत्र था और अर्बुद देश का राजा था, के बारे में वर्णन मिलता है। ➢ इस अभिलेख में राजस्थान शब्द का प्राचीनतम प्रयोग 'राजस्थानीयादित्य' के रूप में किया गया है।
चिरवा का अभिलेख (1273 ई. \ वि.सं. 1330 उदयपुर)	➢ प्रशस्तिकार – रत्नप्रभ सूरी ➢ शिल्पकार – देल्हण ➢ लेखक - पार्श्वचन्द्र ➢ भाषा -संस्कृत ➢ गुहिल वंशीय बप्पा रावल के वंशधर पदम सिंह, जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह की उपलब्धियो का उल्लेख है ➢ 13वीं सदी की ग्राम्य व्यवस्था, सामाजिक-धार्मिक जीवन की जानकारी | ➢ विष्णु मंदिर व शिव मंदिर के लिए भूमि अनुदान का वर्णन मिलता है
अपराजित का शिलालेख (661 ई. उदयपुर)	➢ 661 ई. में उदयपुर जिले के नागदा गाँव के निकट कुंडेश्वर मंदिर की दीवार पर अंकित किया गया। ➢ रचयिता - दामोदर ➢ यह लेख गुहिल वंश के राजा अपराजित के बारे में वर्णन करता है।
सामोली अभिलेख (646) (उदयपुर)	➢ इसके अनुसार वटनगर (सिरोही) से आये हुए महाजन समुदाय के मुखिया जेंतक महत्तर ने अरण्यवासिनी देवी (जावर माता का) मंदिर बनवाया था। ➢ गुहिल शासक शिलादित्य के समकालीन ➢ यह अभिलेख जावर के निकट अरण्यगिरी में ताँबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है।
आमेर का लेख (1612 ई. जयपुर)	➢ इसमें कछवाहा वंश को रघुवंशतिलक"' कहकर संबोधित किया गया है। ➢ इसमें पृथ्वीराज, भारमल, भगवन्तदास का उल्लेख है तथा मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।
भाब्रू शिलालेख	➢ यहाँ अशोक मौर्य के 2 शिलालेख मिले हैं ➢ यह 1837 ई. में "बीजक की पहाड़ी से कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था।

(मौर्य कालीन, 268-232 ई. पू.) (जयपुर)	➢ वर्तमान में यह कलकता संग्रहालय में रखा है । ➢ इससे अशोक के बुद्ध धर्म का अनुयायी होना सिद्ध होता है एवं अशोक द्वारा बुद्ध, धम्म एवं संघ की शरण में जाने को कहा गया है । ➢ इसे मौर्य सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था ।
घोसुण्डी शिलालेख (द्वितीय सदी ई. पू.), (चित्तौडगढ़)	➢ घोसुण्डी, चित्तौडगढ़ से प्राप्त हुआ । ➢ भाषा -संस्कृत, लिपि- ब्राह्मी । ➢ सर्वप्रथम डी. आर. भंडारकर द्वारा पढ़ा गया । ➢ वैष्णव या भागवत धर्म की जानकारी देने वाला राजस्थान का प्राचीनतम अभिल्लेख । ➢ समयकाल – दूसरी सदी ई. पूर्व ➢ एक बड़ा खण्ड उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित । ➢ अश्वमेध यज्ञ करने और विष्णु (वासुदेव) मंदिर की चारदीवारी बनवाने का वर्णन है।
नगरी का शिलालेख (200-150 ई.पू) (चित्तौडगढ़)	➢ ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण किया गया है। ➢ इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख से मिलती है । ➢ डॉ गोरीशंकर हिराचंद ओझा को नगरी नामक स्थान से प्राप्त हुआ ➢ राजस्थान वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर संग्रहालय में स्थित ।
मानमोरी का शिलालेख (सन 713 ई.) (चित्तौडगढ़)	➢ मौर्य वंश से सम्बंधित यह लेख चित्तौड के पास मानसरोवर झील के तट से कर्नल टॉड को मिला था। ➢ चार मौर्य राजाओं – महेश्वर, भीम, भोज एवं मान का उल्लेख ➢ इसका प्रशस्तिकार नागभट्ट का पुत्र पुष्य है और उत्कीर्णक करुण का पौत्र शिवादित्य है। ➢ चित्रांगद मौर्य का उल्लेख है जिसने चित्तौडगढ़ का निर्माण करवाया । ➢ कर्नल जेम्स टॉड ने इसे इंग्लैंड ले जाते समय असंतुलन की वजह से समुद्र में फेंक दिया था। ➢ इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया है। ➢ इसमें चित्तौड़ दुर्ग (चित्रकूट) का निर्माण करवाने वाले मौर्य शासक चित्रांग (चित्रांगद) का भी उल्लेख है I
राज प्रशस्ति (1676 ई./वि.स. 1732) (राजसमंद)	➢ भाषा = संस्कृत, परन्तु अन्त में कुछ पंक्तियाँ हिन्दी में भी है I ➢ देश का सबसे बड़ा संस्कृत शिलालेख है I ➢ इस प्रशस्ति को राजसिंह प्रशस्ति महाकाव्य की संज्ञा दी गई है I ➢ इस प्रशस्ति में राजसिंह के अकाल राहत कार्यों, किशनगढ़ की राजकुमारी चारूमती से विवाह का उल्लेख है I ➢ प्रशस्तिकार- रणछोड़ भट्ट द्वारा I ➢ महाराणा राजसिंह सिसोदिया के समय स्थापित करवाया गया था। ➢ यह राजसमन्द झील की 9 चौकी की पाल पर 25 श्लोकों में उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है। ➢ इसमें बापा रावल से लेकर राणा जगतसिंह द्वितीय तक की गुहिलों की वंशावली है। ➢ इसमें महाराणा अमरसिंह द्वारा की गई मुगल मेवाड संधि का वर्णन है।
कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई., राजसमंद)	➢ प्रशस्तिकार उत्कीर्णक /- कवि महेश ➢ राजस्थान के राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भश्याम मंदिर में स्थित पाँच शिलाओं में उत्कीर्ण है। ➢ इसमें बाप्पा रावल को विप्रवंशीय बताया गया है।

	➢ इसमें हम्मीर का चेलावाट जीतने का वर्णन है और उसे विषमघाटी पंचानन कहा गया है। ➢ उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है I
कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति (1460 ई., चित्तौडगढ़)	➢ प्रशस्तिकार- महेश भट्ट ➢ रचयिता- अत्रि और महेश ➢ यह राणा कुम्भा की प्रशस्ति है। ➢ चित्तौड़ किले में कीर्ति स्तंभ पर 'संस्कृत' भाषा में उत्कीर्ण I ➢ इसमें राणा कुम्भा को महाराजाधिराज, अभिनव भरताचार्य, हिन्दू सुरताण, रायरायन, राणो रासो छापगुरु, दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरु, चापगुरु आदि के नाम से संबोधित किया गया है। ➢ इसमें मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को कुम्भा द्वारा पराजित किये जाने का वर्णन किया गया है एवं तत्पश्चात विजय स्तंभ निर्माण करवाने का उल्लेख है।
रणकपुर प्रशस्ति (1439 ई. या वि.सं. 1496), पाली	➢ इसे रणकपुर के जैन चौमुखा मंदिर में उत्कीर्ण करवाया गया । ➢ मंदिर का सूत्रधार – दैपाक ➢ भाषा – संस्कृत एवं नागरी ➢ मेवाड के राजवंश एवं धरणकशाह जैन के वंश का परिचय मिलता है। ➢ बप्पा एवं कालभोज को अलग- अलग व्यक्ति बताया गया है। ➢ गुहिलों को बाप्पा रावल के पुत्र बताया गया है।
जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652 ई., उदयपुर)	➢ प्रशस्तिकार – कृष्णभट्ट व लक्ष्मीनाथ ➢ इसमें बाप्पा रावल से लेकर जगतसिंह सिसोदिया तक गुहिलों का वर्णन है। ➢ यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में स्थित है। ➢ प्रताप के समय लड़े गए हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन किया गया है। ➢ प्रशस्ति के अनुसार महाराणा ने पिछोला के तालाब में मोहन मंदिर बनवाया और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
श्रृंगी ऋषि का शिलालेख (1428 ई. उदयपुर)	➢ संस्कृत भाषा में ➢ हम्मीर से मोकल तक के शासको का वर्णन किया गया है। ➢ मोकल द्वारा कुण्ड बनाने और उसके वंश का वर्णन किया गया है। ➢ रचनाकार कविराज वाणीविलास योगेश्वर ➢ उत्कीर्णकर्ता- फना
बरनाला अभिलेख (278 ई.)	➢ वैष्णव सम्प्रदाय ➢ जयपुर

<u>अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ</u>

नाम	स्थान	काल	विवरण
बडली \बरली का शिलालेख	अजमेर (घिलोत माता के मन्दिर से)	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व	➢ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त ➢ राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख ➢ ब्राह्मी लिपि ➢ वर्तमान में अजमेर संग्राहलय में सुरक्षित है ।
नान्दसा यूप स्तम्भ लेख	भीलवाड़ा	225 ई.	➢ इसकी स्थापना सोम द्वारा की गई ।

बड़वा यूप अभिलेख	कोटा (बडवा गाँव में)	238-39 ई.	➢ भाषा - संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी उत्तरी है । ➢ इसमें मौखरी राजाओं का वर्णन मिलता है और उनसे संबंधित यह सबसे पुराना और पहला अभिलेख है। ➢ यह तीन यूप (स्तंभ) पर खुदा है ।
भ्रमरमाता का लेख	चित्तौड़	490 ई.	➢ गौर वंश और औलिकर वंश के शासकों का वर्णन मिलता है । ➢ रचयिता – ब्रह्मसोम (मित्रसोम के पुत्र) ➢ लेखक – पूर्वा ➢ राजपुत्र शब्द का उल्लेख
दस्तूर कौमवार	जयपुर		➢ दस्तूर कौमवार जयपुर राज्य के अभिलेखों की महत्वपूर्ण अभिलेख शृंखला है ➢ जयपुर रियासत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
कणसवा अभिलेख	कोटा	738 ई.	➢ मौर्य वंशी राजा धवल का उल्लेख (शायद राजस्थान का अंतिम मौर्य शासक) ।
ग्वालियर प्रशस्ति		880 ई.	➢ मिहिरभोज प्रथम की देन ➢ संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण ➢ लेखक – भट्टधनिक का पुत्र बालादित्य ➢ गुर्जर प्रतिहारों के वंशावलियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है ।
प्रतापगढ़ अभिलेख	प्रतापगढ़	946 ई.	➢ गुर्जर प्रतिहार नरेश महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन है।
अचलेश्वर प्रशस्ति	आबू		➢ इसमें पुरुष के अग्निकुंड से उत्पन्न होने का उल्लेख है। ➢ धूम्रराज को परमारों का मूल पुरुष या आदि पुरुष माना जाता है।
लूणवसही की प्रशस्ति	आबू-देलवाड़ा	1230 ई.	➢ भाषा - संस्कृत ➢ इसमें आबू के परमार शासकों और वास्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन है। ➢ नेमीनाथ प्रशस्ति में आबू के शासक धारावर्ष का वर्णन है।
नाथ प्रशस्ति	लकुलिश मंदिर (उदयपुर)	971 ई.	➢ मेवाड़ के इतिहास का वर्णन ➢ भाषा – संस्कृत ➢ लिपि - देवनागरी
नेमीनाथ की प्रशस्ति	आबू	1230 ई.	➢ रचयिता - सोमेश्वरदेव (शुभचन्द्र) ➢ सुरथोत्सव के रचयिता (शुभचन्द्र) ➢ उत्कीर्णकर्ता सूत्रधार चण्डेश्वर
बरबद का लेख	बयाना	1613-14 ई.	➢ इसमें अकबर की पत्नी मरियम उस -ज़मानी के द्वारा बरबथ में एक बाग़ और बावड़ी का निर्माण करने का उल्लेख है।

Unleash the topper in you

बर्नाला यूप स्तम्भ लेख	जयपुर	227 ई.	
चाकसु अभिलेख	जयपुर	813 ई.	➢ गुहिल वंशीय भरत्रभट्ट और उसके वंशजों का वर्णन है। ➢ उत्कीर्णकर्ता – देइआ
बुचकला अभिलेख	जोधपुर (बिलाडा)	815 ई.	➢ वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार का उल्लेख है। ➢ सूत्रधार – देइ
राजोरगढ़ अभिलेख	अलवर	960 ई.	➢ मथनदेव प्रतिहार
हर्ष अभिलेख	सीकर	973 ई.	➢ चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख । ➢ हर्षनाथ (सीकर) मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा करवाये जाने का उल्लेख । ➢ वागड़ को वार्गट कहा गया I
रसिया की छतरी का शिलालेख	चित्तौड़गढ़	1274 ई.	➢ रचयिता - प्रियपटु के पुत्र नागर जाति के ब्राह्मण वेद शर्मा I ➢ सूत्रधार - सूत्रधार सज्जन ➢ इसमें गुहिल को बापा का पुत्र बताया गया है। ➢ गुहिल वंशीय शासकों की जानकारी (बप्पा से नरवर्मा तक) I
डूंगरपुर की प्रशस्ति	डूँगरपुर	1404 ई	➢ उपरगाँव (डूँगरपुर) में में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण । ➢ वागड़ के राजवंशों के इतिहास का वर्णन।

सिक्के

- सर्वप्रथम राजस्थान के चौहान वंश ने मुद्राएँ जारी की।
  - ✓ ताँबे के सिक्के - द्रम्म और विशोपक
  - ✓ चाँदी के सिक्के - रूपक
  - ✓ सोने के सिक्के - दीनार
- मेवाड़ में प्रचलित सिक्के –
  - ✓ ताँम्बे के सिक्के- ढिंगला, भिलाडी. त्रिशुलिया, भिडरिया, नाथद्वारिया I
  - ✓ चाँदी के सिक्के- द्रम, रूपक I
- अकबर ने राजस्थान में सिक्का एलची जारी किया। (चित्तोड़ विजय के बाद) I
  - ✓ अकबर ने आमेर में सर्वप्रथम टकसाल खोलने की अनुमति दी I
- अंग्रेजों के समय जारी मुद्राओं में कलदार (चाँदी)

सर्वाधिक प्रसिद्ध

महत्वपूर्ण तथ्य

- 1871 में कार्लाइल को नगर (उणियारा) से लगभग 6000 मालव सिक्के मिले थे I

- तत्कालीन राजपूताना की रियासतों के सिक्कों के विषय पर वेब ने 1893 ई.में "द करेंसीज ऑफ द हिंदू स्टेट ऑफ राजपूताना" नामक पुस्तक लिखी।
- रैढ़ (टोंक) में खुदाई के दौरान 3075 चाँदी के पंचमार्क सिक्के मिले हैं इन सिक्कों को धरण या पण कहा जाता था। इन सिक्कों का समयकाल 600 ई. पू. - 200 ई. पू.
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से आहत मुद्रा एवं कुषाण कालीन मुद्राएँ मिली है।
- बैराठ सभ्यता (कोटपुतली-बहरोड़) से भी अनेक मुद्राएँ मिली है जिनमें से 16 मुद्राएँ प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनेण्डर की है।
- इंडो - सासानी सिक्कों (दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में प्रचलित) की भारतीयों ने गधिया नाम से पहचान की है जो चाँदी और ताम्र धातु के बने हुए होते थे।
- मेवाड़ के स्वरूपशाही और मारवाड़ के आलमशाही सिक्के ब्रिटिश प्रभाव वाले थे जिनमें "औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया" लिखा होता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1900 ई. में स्थानीय सिक्कों के स्थान पर कलदार का चालान जारी हुआ।

राजस्थान के प्राचीन सिक्के

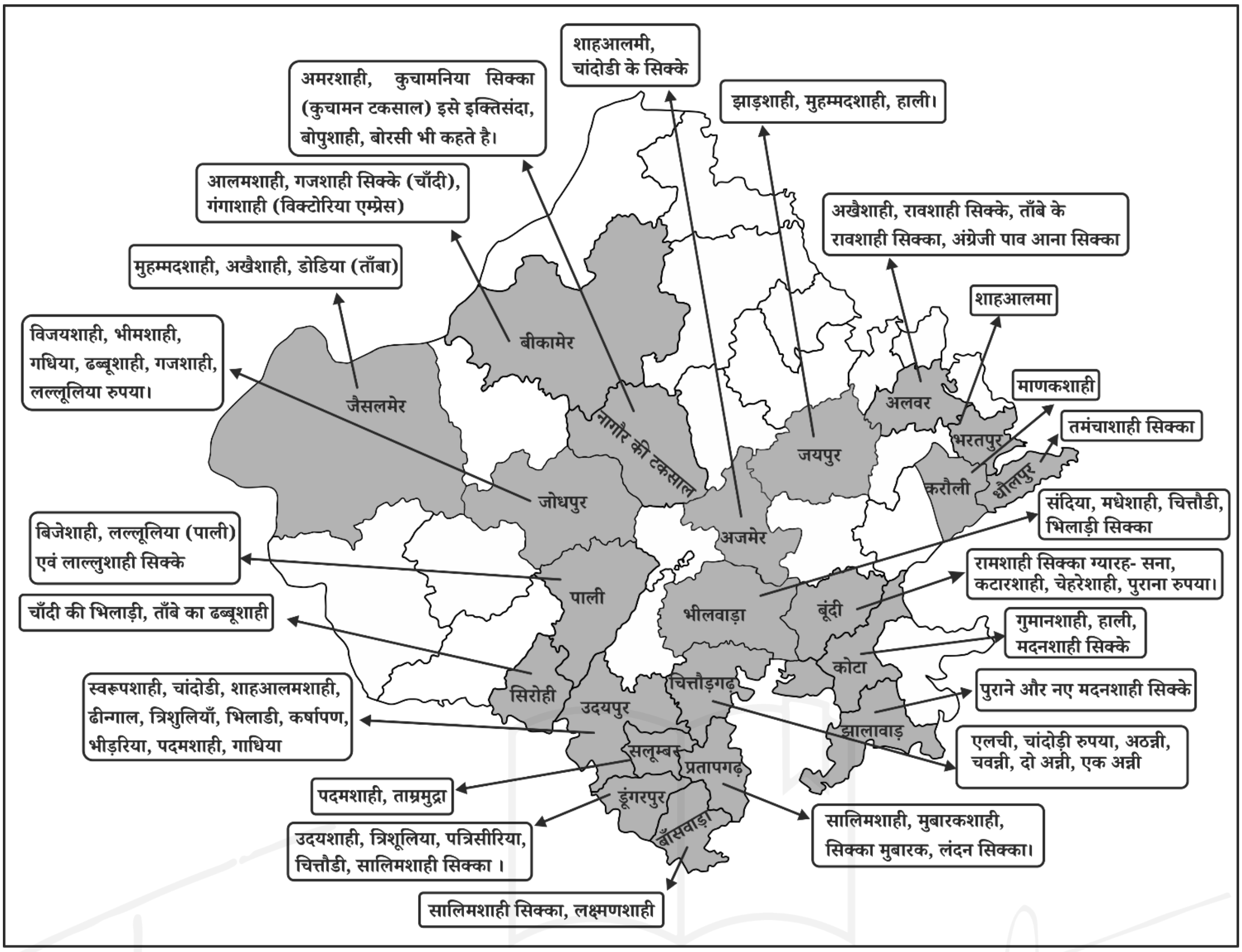

<u>ताम्रपत्र</u>

राजस्थान के प्रमुख ताम्र पत्र

ताम्र पत्र	काल	विवरण
धुलेव का दान पत्र	679 ई.	➢ किष्किंधा (कल्याणपुर) के राजा भेटी द्वारा उब्बरक नामक गांव को भट्टिनाग नामक ब्राह्मण को अनुदान देने का उल्लेख I
ब्रोच गुर्जर ताम्रपात्र	978 ई.	➢ गुर्जर वंश के सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा कावेरी तक के अभियान का वर्णन। ➢ इसके आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों की यू-ए-ची जाति का माना।
मथनदेव का ताम्र-पत्र	959 ई.	➢ मंदिर के लिए भूमि दान की व्यवस्था का उल्लेख है।
वीरपुर का दान पत्र	1185 ई.	➢ इसमें गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के सामंत वागड़ के गुहिल वंशीय राजा अमृतपालदेव के सूर्यपर्व पर भूमिदान देने का उल्लेख है।
आहड़ ताम्र-पत्र	1206 ई.	➢ गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) का है। ➢ गुजरात के मूलराज से भीमदेव द्वितीय तक सोलंकी राजाओं की वंशावली दी गई है । ➢ मेवाड़ में गुजरात के चालुक्यों का शासन होना प्रमाणित होता है । ➢ इसमें यह भी पता चलता है कि भीमदेव के समय में मेवाड़ पर गुजरात का प्रभुत्व था ।
पारसोली का ताम्र-पत्र	1473 ई.	➢ महाराणा रायमल के समय का है। ➢ भूमि की किस्मों का उल्लेख – पीवल, गोरमो, माल, मगरा । ➢ यह भूमि उस समय की सभी लागतों से मुक्त थीं।

खेरादा ताम्र-पत्र	1437 ई.	➢ एकलिंगजी में राणा कुंभा द्वारा किए गए प्रायश्चित, उस समय का दान, धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
चीकली ताम्र-पत्र	1483 ई.	➢ किसानों से एकत्र किए जाने वाले 'विविध लाग-बागों' को दर्शाता है। ➢ पटेल, सुथार और ब्राह्मणों द्वारा खेती का वर्णन। ➢ वागडी भाषा में उत्कीर्ण।
ढोल का ताम्र-पत्र	1574 ई.	➢ महाराणा प्रताप के समय का है जब उन्होंने ढोल नामक एक गाँव में सैन्य चौकी का प्रबंधन किया था और अपने प्रबंधक जोशी पुणो को ढोल में भूमि अनुदान दिया।
पुर का ताम्र-पत्र	1535 ई.	➢ जौहर में प्रवेश करते समय हाड़ी रानी कर्मावती द्वारा दिए गए भूमि अनुदान के बारे में जानकारी । ➢ बहादुरशाह के चितौड़ आक्रमण की जानकरी मिलती है
कोघाखेड़ी (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1713 ई.	➢ कोघाखेड़ी गाँव का उल्लेख जिसे महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दिनकर भट्ट को हिरण्याशवदान में दिया था।
राजसिंह का ताम्रपत्र	1678 ई.	➢ महाराणा राज सिंह के समय का है।
बेंगू का ताम्रपत्र	1715 ई.	➢ महाराणा संग्राम सिंह के समय का है।
बेडवास का ताम्र पत्र	1559 ई.	➢ उदयपुर बसाने के संवत् 1616 की पुष्टि पर प्रकाश डालता है।
लावा गाँव का ताम्रपत्र	1558 ई.	➢ महाराणा उदयसिंह ने लड़कियों की शादी के अवसर पर 'मापा' कर नहीं लेने आदेश । इस ताम्रपत्र से महाराणा के एकलिंगजी आने की तिथि एवं संवत 1616 में उदयपुर बसाने की पुष्टि होती है।

पुरालेखागारीय स्त्रोत

राजस्थान में पूरालेखीय स्त्रोत का विशाल संग्रह राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में सुरक्षित है, साथ ही राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में भी राजस्थान के कई रिकॉर्ड उपलब्ध है ।

राज्य अभिलेखागार बीकानेर में निम्नलिखित बहियाँ संग्रहीत है -

- ➢ हकीकत बही- राजा की दिनचर्या का उल्लेख
- ➢ हुकूमत बही - राजा के आदेशों की नकल
- ➢ कमठाना बही - भवन व दुर्ग निर्माण संबंधी जानकारी
- ➢ खरीता बही - पत्राचारों का वर्णन

साहित्यिक स्त्रोत

- ➢ राजस्थान की ऐतिहासिक जानकारी का उल्लेख रास, रासौ, वचनिका, दवावैत, प्रकास, वेलि, ख्यात आदि राजस्थानी साहित्य में मिलता है

महत्वपूर्ण तथ्य

- ➢ रास - 11वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचा गया ।
- ➢ रासौ - रास के समानांतर राजाश्रय में रासो साहित्य लिखा गया जिसके द्वारा तत्कालीन, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितयों के मूल्यांकन की आधारभूत पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।
- ➢ राजाओं की प्रशंसा में लिखे गए धार्मिक ग्रंथ जिसमें उनके युद्ध अभियानों एवं वीरतापूर्ण कृत्यों के साथ राजवंश का उल्लेख मिलता है।
- ➢ उदा: बीसलदेव रासौ, पृथ्वीराज रासौ।
- ➢ वचनिका – अपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी में लिखित गद्य-पद्य तुकांत रचना जिसमें अंत्यानुप्रास मिलता है।
- ➢ दवावैत – उर्दू-फारसी की शब्दावली से युक्त राजस्थानी कलात्मक लेखन शैली जिसमें किसी की प्रशंसा दोहों में होती है।
- ➢ प्रकास – किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों पर प्रकाश डालने वाली कृतियाँ प्रकास कहलाती है।
- ➢ उदा: राजप्रकास, पाबूप्रकास
- ➢ वेलि - राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदारता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है ।
- ➢ ख्यात - ख्यात का अर्थ होता है ख्याति अर्थात् यह किसी राजा महाराजा की प्रशंसा में लिखा गया ग्रंथ ।
  - ✓ यह वंशावली व प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रुप होता है।
  - ✓ ख्यात साहित्य गद्य में लिखा जाता है।

राजस्थानी साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराजरासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	सारंगधर
संगत रासो	गिरधर आंसिया
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
पाथल और पीथल	कन्हैया लाल सेठिया
धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
लीलटांस	कन्हैया लाल सेठिया
रूठीराणी, चेतावणी रा चूंगठिया	केसरीसिंह बारहठ
राजस्थानी कहांवता	मुरलीधर व्यास
राजस्थानी शब्दकोश	सीताराम लीलास
नैणसी री ख्यात	मुहणौत नैणसी
मारवाड रा परगाना री विगत	मुहणौत नैणसी
राव रतन री वेलि (बूँदी के राजा रतनसिंह के बारे में)	कल्याण दास
कान्हड़दे प्रबंध	कवि पद्मनाभ (अलाउद्दीन के जालौर आक्रमण का वर्णन)
राव जैतसी रो छंद	बीठू सूजा
राजरूपक	वीरभान
सूरज प्रकाश	करणीदान (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के दरबारी कवि)
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मीसण

<u>महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युद्ध</u>

वर्ष	युद्ध	किसके के बीच हुआ	परिणाम
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	गौरी की हार हुई
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	पृथ्वीराज की हार हुई
1301	रणथंभौर का युद्ध	हम्मीरदेव-अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर की हार
1303	चित्तौड़ का युद्ध	राणा रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी	राणा रतन सिं की हार
1308	सिवाना का युद्ध	सातलदेव चौहान-अलाउद्दीन खिलजी	साहलदेव की हार
1311	जालोर का युद्ध	कान्हड देव – अल्लाउद्दीन खिलजी	कान्हड देव की हार
12 FEB 1527	बयाना का युद्ध	राणा सांगा -बाबर	राणा सांगा की विजय
1527	खानवा का युद्ध	राणा सांगा - बाबर	राणा सांगा की हार
1544	सुमेल का युद्ध (जैतारण)	मालदेव-शेरशाह सूरी	मालदेव की हार
1576	हल्दीघाटी का युद्ध	महाराणा प्रताप-अकबर	महाराणा प्रताप की हार
1582	दिवेर का युद्ध	महाराणा प्रताप, अमर सिंह - मुगल सेना	महाराणा विजयी
1644	मतीरे की राड़	अमरसिंह (नागौर)- कर्णसिंह	अमरसिंह विजयी
1803	लसवारी का युद्ध	दौलत राव सिंधिया-लॉर्ड लेक	सिंधिया की हार

<u>अन्य पुरावशेष</u>

- महाभारत में मत्स्य जनपद (अलवर, भरतपुर और जयपुर) का उल्लेख मिलता है जिसकी राजधानी विराट नगर थीI
- स्कंदपुराण - भारतीय राज्यों की एक सूची देता है जिसमें राजस्थान के कुछ राज्य शामिल हैं - शाकम्भरी सपादलक्ष; मेवाड़ सपादलक्ष; तोमर सपादलक्ष: वागुरी (बेडेड); विराट (बैराट); और भद्र।
- चीनी यात्री युआनच्वांग (ह्वेन त्सांग) - पो-ली-ये-ता-लो नामक स्थान का उल्लेख किया है जिसे विराट या बैराट के समकक्ष माना जाता है।

2 CHAPTER

राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

मानव इतिहास को तीन कालों में विभाजित किया जाता है –

1. प्राक् युग (प्रागैतिहासिक युग)
2. आद्य युग
3. एतिहासिक युग

प्राक् युग (प्रागैतिहासिक युग)

प्राक् युग वह काल है जब मानव ने लेखनकला का आविष्कार नहीं किया था, और इस काल के बारे में जानकारी लिखित साक्ष्यों के बजाय भौतिक अवशेषों, जैसे उपकरणों, गुफा चित्रों, कंकालों, और अन्य पुरातात्विक साक्ष्यों से मिलती है। यह मानव इतिहास का सबसे प्राचीन काल है, जिसमें मानव ने धीरे-धीरे अपनी जीवनशैली विकसित की।

प्राक् युग के कालखंड

1. पाषाण युग (Stone Age):
- इस काल में मानव पत्थर के उपकरणों का उपयोग करता था।
- इसे तीन उप-कालों में विभाजित किया गया है:
  - ✓ पुरापाषाण युग (Paleolithic Age): मानव शिकारी और संग्रहकर्ता था।
  - ✓ मध्यपाषाण युग (Mesolithic Age): खेती और पशुपालन की शुरुआत हुई।
  - ✓ नवपाषाण युग (Neolithic Age): स्थायी बस्तियों और कृषि का विकास हुआ।

2. ताम्र युग (Copper Age):
- इस काल में मानव ने तांबे का उपयोग शुरू किया।
- तांबे के उपकरणों और हथियारों का निर्माण हुआ।

3. कांस्य युग (Bronze Age):
- तांबे और टिन के मिश्रण से कांसे का उपयोग।
- हड़प्पा सभ्यता इसी काल का उदाहरण है।

पुरापाषाण युग (Paleolithic Age)

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व-10000 ईसा पूर्व)

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उपकरण बनाने की कला का ज्ञान नहीं था।
- इस काल के महत्त्वपूर्ण उत्खननकर्ता –
  - ✓ वीरेन्द्रनाथ मिश्र
  - ✓ आर.सी. अग्रवाल
  - ✓ डॉ. विजय कुमार
  - ✓ हरिश्चंद्र मिश्रा
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है -

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान से सम्बंधित इस युग के स्थल मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में स्थित है।
- 1870 में सी.ए. हैकेट ने सर्वप्रथम जयपुर और इन्द्रगढ से पत्थर के बने पाषाणकालीन हस्त कुठार (Handaxe) की खोज की थी |
- सेटनकार ने झालावाड़ से पाषाणकालीन और बी. आल्चिन ने जालौर से पूर्व पाषाणकालीन उपकरणों की खोज की |
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।
- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल – अरावली के पश्चिम में लूनी घाटी, पाली और जोधपुर, मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, लूनी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, हुंडगाँव, पिचाक आदि।
- मध्य पुराषाणकाल के उपकरण चित्तौड़गढ़ जिले के बनास-बेड़च नदी तंत्र की वागन और कन्दमाली नदी घाटियों तथा कोटा में चंबल नदी घाटी में पाए गए हैं।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- राज्य के जयपुर, अलवर, कोटा, झालावाड़, भरतपुर तथा चितौड़गढ़ क्षेत्रों से प्रचुर मात्रा में शैल चित्र प्राप्त हुए है।

- विराटनगर (जयपुर) में शैलचित्रों की बहुलता के कारण पुरातत्व वेताओं ने इसे प्राचीन युग की चित्रशाला भी कहा है।
- विराटनगर से प्राकृतिक गुफाएं तथा शैलाश्रय की खोज हुई तथा भरतपुर जिले के 'दर' नामक स्थान से कुछ शिलाकुटीरों में व्याघ्र, बारहसिंघा व मानव आकृतियाँ चित्रित है जो प्रारम्भिक पाषाण-कालीन मानव के चित्रकला से परिचय का प्रमाण है।
- राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास नदी के तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- बागोर- मध्यपाषाणकालीन स्थल बागोर, भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे एक बड़े रेत के टीले के रूप में स्थित है जिसे महासती कहा जाता है। प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल. एस. लेश्निक द्वारा किया गया तथा यहाँ से तांबे के उपकरणों में छेद वाली सुई और पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं। उद्योग की दृष्टि से यह भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।
- राजस्थान में विशेष रूप से 2 क्षेत्रों से मध्य पाषाणकालीन स्थल खोजे गए हैं -
  - ✓ दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - ✓ पश्चिमी राजस्थान में निचला लूनी बेसिन
- मुख्य स्थान -
  - ✓ तिलवाड़ा, बागौर, निम्बाहेड़ा, मंडपिया
- इसके अतिरिक्त चित्तौड़ की बेड़च नदी और विराटनगर से मध्य पाषाणकालीन उपकरण मिले है।
- इन छोटे पाषाण उपकरणों को माइक्रोलिथ कहा गया है।
  - ✓ स्क्रेपर
  - ✓ पॉइंट

राजस्थान में नवपाषाण काल

- अजमेर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़, जोधपुर से नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए है जिसमे भीलवाडा के बागौर और बालोतरा के तिलवाड़ा स्थान महत्त्वपूर्ण है।
- राजस्थान में अवशेष - बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर), तिलवाड़ा (बालोतरा) तथा भरणी (टोंक)।
- तिलवाड़ा से प्राप्त अवशेष :- पाँच आवास स्थल, चाक पर बने सलेटी व लाल रंग के मृदभांड, अग्निकुंड (मानव अस्थि भस्म और मृत पशुओं की अस्थियाँ- मानव की आखेटवृति) ।

ताम्रयुगीन सभ्यताए

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम “ताम्रवती” अंकित है।
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे “आघाटपुर/ आघाट दुर्ग” या “धूलकोट” या “ताम्रवती नगरी”, “ताम्बावली” कहा जाता था।
- यह आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है तथा बनास नदी क्षेत्र [बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी] में होने के कारण इसे बनास सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि की इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में आहड़ सभ्यता के कई स्थल मौजूद है जैसे गिलुण्ड, ओझियाना, बालाथल, पछमता, भगवानपुरा, रोजड़ी आदि I
- अवधि – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- प्रथम उत्खनन कार्य – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास के निर्देशन में।
- अन्य उत्खननकर्ता – 1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद 1961-62 में एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया जिसमें राजस्थान प्रशासन की ओर से श्री पी.एल. चक्रवती ने भाग लिया।1961-62 में डेक्कन कॉलेज, पूना व मेलबर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया ने भी आहड़ का उत्खनन कार्य किया।
- आहड़ एक ग्रामीण संस्कृति थी। यहाँ के लोक ताँबा, लोहा, टिन व सोने से परिचित थे।

विशेषताएँ

- प्रमुख उद्योग - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ✓ ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ✓ ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त हुई है ।
- इस सभ्यता के लोग मकान बनाने के लिए धूप में सुखाई ईंटो एवं पत्थरों का प्रयोग का प्रयोग करते थे।
- मृतकों को गहनों के साथ दफनाते थे।
- माप तोल के बाट प्राप्त– वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भाण्ड का प्रयोग किया जाता था।
  - ✓ मृद्भाण्ड उल्टी तिपाई विधि से बनाये गए है।
- गोरे व कोठे आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड
  - ✓ प्रमुख खाद्यान्न - गेहूँ, ज्वार और चावल

Topper Notes Unleash the topper in you

- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें प्राप्त हुई है, जिनमे एक मुद्रा पर एक ओर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर यूनानी देवता अपोलो का चित्र अंकित है जिसके हाथों में तीर और तरकश है।
- "बनासियन बुल" – आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।
- राजसमन्द के गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्म संस्कृति मिली है, जिसे बनास संस्कृति भी कहा जाता है। यद्यपि आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका बहुतायत में उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

मकानों की नींवो में पत्थरों का प्रयोग, कपड़े की छपाई हेतु लकडी के बने ठप्पे (रंगाई छपाई व्यवसाय के प्रमाण), ईरानी शैली के छोटे हत्थेदार बर्तन, हड्डी से निर्मित चाकू, एक मकान में एक पंक्ति में 7 चूल्हे (संयुक्त परिवार प्रणाली), टेराकोटा निर्मित 2 स्त्री धड़, लेपिस लाजुली (लाजवर्त) - बाह्य सम्पर्कों (ईरान) का संकेत, रसोई में दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं।

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	➢ यह सभ्यता राजसमंद जिले में गिलूण्ड के पास स्थित है। ➢ पछमता मेवाड़ क्षेत्र की आहड़-बनास सभ्यता से संबंधित है जो कि हड़प्पा के समकालीन है। ➢ यहाँ कई कलात्मक वस्तुएं जैसे नक्काशीयुक्त जार, सीप की चूड़ियां, टेराकोटा के मनके, शंख और जवाहरात जैसे लेपिस लेजूली (यह अर्द्ध कीमती पत्थर अफगानिस्तान के बदख्शां में पाया जाता है) मिले हैं।
गिलुण्ड सभ्यता	➢ राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित ग्रामीण संस्कृति । ➢ 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया। तत्पश्चात 1998 से 2003 ई. के मध्य दक्कन कॉलेज पूना के प्रो.वी.एस. शिन्दे एवं पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) के प्रो. ग्रेगरी पोशल के निर्देशन में गिलुण्ड सभ्यता का उत्खनन किया गया। ➢ उत्खनन में विशाल भवनों (100×80), मिट्टी के खिलौनें, पत्थर की गोलियाँ एवं हाथी दांत की चूड़ियों के अवशेष मिले है। ➢ 5 प्रकार के मृद्धांड प्राप्त: ✓ सादे काले, पोलिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित
बालाथल	➢ उदयपुर की वल्लभनगर तहसील बेड़च नदी के किनारे में स्थित। ➢ खोजकर्ता - वी .एन. मिश्र (1993) ➢ लोगों ने पत्थर और मिट्टी की ईंटों के बड़े-बड़े मकान बनाये । ✓ 11 कमरों का विशाल दुर्गनुमा भवन के अवशेष(दुर्गीकरण के पुरावशेष)। ➢ यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण" माना जाता है। ➢ अपरिष्कृत मृद्धाण्ड ✓ लोहा गलाने की भट्टियाँ भी प्राप्त हुई। ➢ योगी मुद्रा में शवाधान किया जाता था। ➢ लोग कृषि, आखेट तथा पशुपालन करते थे।
ओझियाना सभ्यता	➢ भीलवाड़ा के बदनोर के पास कोठारी नदी पर स्थित ताम्रपाषाणिक स्थल। ➢ सफेद बैल और गाय की मृण मूर्तियाँ प्राप्त। ➢ लाल काले मृदभांड की प्राप्ति ➢ उत्खनन - सर्वप्रथम उत्खनन 1998 में आर.सी. अग्रवाल के द्वारा किया गया। 2000 ई. में बी.आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाठी ने ओझियाना का उत्खनन कार्य भारतीय पुरातत्व संरक्षण विभाग के निर्देशन में किया। जिनके सहयोगी बी.आर. सिंह तथा एस.सी. गुप्ता थे। ➢ यह नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित सभ्यता स्थल है।

गणेश्वर (सीकर)

- सीकर में कान्तली नदी के किनारे स्थित है, जिसे "पुरातत्व का पुष्कर" भी कहा जाता है। यहाँ से ताम्रयुगीन संस्कृति का प्रचुर भंडार प्राप्त होने के कारण इसे "ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी"/ताम्र संचयी संस्कृति कहा जाता है।

- उत्खनन - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में और बाद में 1978-79 में विजय कुमार ने निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया।
- गणेश्वर 2800 ई.पू. की ताम्रयुगीन सभ्यता का प्रारम्भिक स्थल है व इस सभ्यता का नामकरण गणेश्वर टीले के नाम पर किया गया।
- वृहदाकार पत्थर के बाँध के साक्ष्य, मकान पत्थर के बनाए गए थे (ईंटो के उपयोग का कोई प्रमाण नही)।
- यहाँ से ताँबे का बाण और मछली पकड़ने का काँटा प्राप्त हुआ, तथा यहाँ से प्राप्त ताम्र उपकरणों में 99% तांबा है।
- गणेश्वर से तांबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो में निर्यात किया जाता था।
- दोहरी पेचदार शिरावाली ताम्रपिन भी यहाँ से प्राप्त हुई है। इसी प्रकार की पिन पश्चिमी एशिया में भी मिली है। सम्भवतः गणेश्वर से इन पिनों का निर्यात वहाँ किया जाता होगा।
- गणेश्वर के उत्खनन से प्राप्त सामग्री को' श्री राजकुमार हरदयाल राजकीय संग्रहालय' सीकर में रखा गया है।
- पुराविदों ने इस सभ्यता को पूर्व हड़प्पा कालीन ताम्रयुगीन सभ्यता कहा है। यह ताम्रयुगीन संस्कृतियों में सबसे प्राचीन सभ्यता है।
- यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों को "कृपषवर्णी मृदपात्र" कहते है, ये बर्तन काले व नीले रंग से सजाए हुए है।

लाछूरा सभ्यता

- भीलवाड़ा जिले की आसींद तहसील में स्थित है।
- उत्खनन- 1998-1999 में बी. आर. मीणा के निर्देशन में।
- साक्ष्य
  - ✓ मानव तथा पशुओं की मृण्मूर्तियाँ
  - ✓ तांबे की चूड़ियाँ
  - ✓ मिट्टी की मुहरें (ब्राह्मी लिपि में 4 अक्षर अंकित) है।
  - ✓ ललितासन में नारी की मृण्मूर्ति

जोधपुरा सभ्यता

- कोटपूतली (जयपुर जिले में) - बहरोड़ में साबी (कृष्णावती) नदी के किनारे स्थित।
- जोधपुरा सभ्यता में "मानव आवास के चिन्ह फर्श व ईंटों की दीवार के रूप में मिलते है।
- लौहयुगीन (पीरियड-III) प्राचीन सभ्यता स्थल
  - ✓ लौह धातु का निष्कर्षण करने वाली भट्टियाँ (उपलों का प्रयोग) भी खोजी गई।
- उत्खनन- 1972-75 में आर .सी. अग्रवाल और विजय कुमार द्वारा
- कपिशवर्णी मृद्पात्रों का भंडार प्राप्त
  - ✓ स्लेटी रंग की चित्रित मृद्भांड संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल
- मकान की छतो पर टाईल्स एवं छप्पर छाने का उपयोग।
- यहां से उत्खनन में गैरिक रंग के पानी पीने के पात्र, कटोरे, तश्तरियों के अवशेष, लोहे के शस्त्र तीरों के अग्रभाग, कीलें, शंख निर्मित चूड़ियों के टुकड़े कुबड़ौल की आकृतियाँ तथा मिट्टी व पत्थर के मनके भी प्राप्त हुए है।
- जोधपुरा से डिश ऑन स्टैंड भी प्राप्त हुआ है।

प्राक् हड़प्पा, विकसित व उत्तर हड़प्पा संस्कृति

कालीबंगा (हनुमानगढ)

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
- खोजकर्ता – अमलानन्द घोष (1952)।
- उत्खननकर्ता - 1961 से 64 ई. के मध्य में बी. बी. लाल, बी. के. थापर, श्री एम,डी. खरे, के. एम. श्रीवास्तव, एस,पी. श्रीवास्तव भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली के निर्देशन में
- उत्खननकर्ता चरण - 5
- कालीबंगा की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी।
- काली बंगा का शाब्दिक - अर्थ काले रंग की चूड़ियां ।
- स्थिति - राजस्थान के हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम में
- जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए और ऐसा अनुमान है की लोग एक ही खेत में दो फसले उगते थे।
  - ✓ इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - ✓ खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
  - ✓ गेहूँ,जौ चना, बाजरा और सरसों के साक्ष्य भी मिले हैं।
- 2900 ईसा पूर्व तक यहाँ एक विकसित नगर था।
- लिपि- सैन्धव लिपि (अभी तक पढ़ी गई है)
- कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ
  - ✓ ताम्र औजार व मूर्तियाँ
    - ये संकेत करती है कि मानव प्रस्तर युग से ताम्रयुग में प्रवेश कर चुका था।
    - ताँबे की काली चूड़ियों की वजह से ही इसे कालीबंगा कहा गया।

Topper Notes
Unleash the topper in you

- ✓ बेलनाकार मुहर
  - सर्वाधिक मुहरें मिट्टी से बनी है एवं उन पर सैन्धव लिपि अंकित है जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
  - पत्थर से बने तोलने के बाट का उपयोग करना मानव सीख गया था।
- ➢ मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर प्राप्त हुई है।
  - ✓ बर्तन
    - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े बर्तन भी प्राप्त हुए है जिन पर चित्रांकन भी किया हुआ है।
    - बर्तन बनाने हेतु 'चारु' का प्रयोग होने लगा था ।
- ➢ कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यतः उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है, तथा इन पर अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्यामितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है।
  - ✓ आभूषण
    - स्त्री व पुरुषों द्वारा प्रयुक्त होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
    - उदाहरण - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
  - ✓ नगर नियोजन के दो टीले
    - पूर्वी टीला (नगर टीला)
    - पश्चिमी टीला (दुर्ग टीला)
  - ✓ दोनों टीलों के चारो और सुरक्षा प्राचीर भी बनी हुई थी।
  - ✓ कालीबंगा को हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता है।
  - ✓ कृषि-कार्य संबंधी अवशेष
    - कपास की खेती के अवशेष प्राप्त
    - मिश्रित खेती (चना व सरसो) के साक्ष्य।
    - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
    - मिट्टी की अलंकृत ईंटों से बने चबूतरे, फर्श
- ➢ कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - ✓ शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण
- ➢ 2600 ई.पू. में आये "भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य" मिला है।
  - ✓ बैल व बारहसिंघा की अस्थियाँ भी प्राप्त हुई।
- ➢ खिलौने
  - ✓ लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो बच्चों के मनोरंजन के प्रति आकर्षण प्रकट करते हैं।
  - ✓ बैलगाड़ी के खिलौने प्राप्त हुए।
- ➢ सात आयताकार व अंडाकार अग्निवेदियाँ तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई।
  - ✓ यह साक्ष्य देता है कि मानव यज्ञ में पशु-बलि भी दिया करते थे।
  - ✓ दुर्ग (किला)
    - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक विशाल दुर्ग (दोहरी रक्षा - प्राचीर से घिरा हुआ) के अवशेष भी प्राप्त हुए।
    - मानव द्वारा अपनाए गए सुरक्षात्मक उपायों का प्रमाण है।

रंगमहल (हनुमानगढ)

- ➢ हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती नदी / घग्गर नदी के निकट स्थित प्रस्तरयुगीन और धातुयुगीन सभ्यता हैं।
- ➢ उत्खनन- डॉ. हन्नारिड के निर्देशन (स्वीडिश पुरातत्विद) में (1952-54)
- ➢ यहाँ से कुषाणकालीन व उससे पहले की 105 ताँबे की मुद्राएँ प्राप्त हुई है।
- ➢ मुख्य रूप से चावल की खेती के साक्ष्य मिले है।
- ➢ मकानों का निर्माण ईंटो से हुआ था।
- ➢ रंगमहल से टोंटीदार घड़े, छोटे-बड़े प्याले, कटोरे, बर्तनों के ढक्कन, दीपदान, धूपदान, मिट्टी की पहियादार खिलौना गाड़ी, घंटाकार मृद्धात्र इत्यादि प्राप्त हुए है। रंगमहल से प्राप्त पात्रों पर मानव तथा पशु आकृतियां चित्रित है।
- ➢ रंगमहल से कुषाण शासकों के सिक्के एवं मिट्टी की मुहरें भी प्राप्त हुई है इस कारण इसे कुषाणकालीन सभ्यता के समान माना जाता है।

बरोर

- ➢ गंगानगर में सरस्वती नदी के तट पर स्थित है।
- ➢ उत्खनन - 2003
- ➢ प्राक्, प्रारंभिक तथा विकसित हड़प्पा काल में विभाजित।
- ➢ विशेषता - मृद्धांडों में काली मिट्टी के प्रयोग के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
  - ✓ वर्ष 2006 - मिट्टी के पात्र में सेलखड़ी के 8000 मनके प्राप्त हुए हैं।
- ➢ हड़प्पाकालीन विशेषताओं के समान जैसे:
  - ✓ सुनियोजित नगर व्यवस्था
  - ✓ मकान निर्माण में कच्ची इटों का प्रयोग
  - ✓ विशिष्ट मृद्धांड परम्परा
- ➢ यहाँ से बटन के आकार की मुहरे प्राप्त हुई।

Unleash the topper in you

लौहयुगीन संस्कृति

इसे "आदि आर्यों की संस्कृति" के रूप में स्वीकार किया जा चुका है।

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे वर्तमान कोटपुतली -बहरोड़ जिले के विराट नगर में स्थित लौहयुगीन सभ्यता है।
- प्राचीन नाम- विराटनगर
  - ✓ मत्स्य महाजनपद की राजधानी
- खोजकर्ता - 1837, कैप्टन बर्ट
- उत्खननकर्ता- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।
- 1837 में कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के प्रथम भाब्रू शिलालेख की खोज की थी।
- बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व
  - ✓ पाषाण, ताम्र पाषाण, लौहयुगीन सामग्री, अशोक का खंडित शिलालेख, शंख लिपि के प्रमाण बौद्ध विहार, बौद्ध चेत्य के अवशेष, आहत मुद्राएँ यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
    - बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है।
    - उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्धांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों में राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
- रहस्यमयी शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- पुरातत्व के महत्व की तीन पहाड़ियाँ:
  - ✓ बीज़क डूँगरी
  - ✓ भीम डूँगरी (भोमली की डूंगरी)
  - ✓ महादेव डूँगरी
- 36 मुद्राएँ प्राप्त - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के, 28 इंडो-ग्रीक मुद्राएँ जिल्मे से 16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेंडर की मानी जाती है
- बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- जयपुर के राजा सवाई राम सिंह ने यहाँ खुदाई करवाई जिससे एक सोने की मंजूषा मिली, जिसमें भगवान बुद्ध के अवशेष है।
- भवन निर्माण के लिए मिट्टी की ईटो का अत्यधिक प्रयोग।
- महाभारत के अनुसार, यहाँ में पांडवों ने अज्ञातवास के समय जीवनयापन किया था
- यहाँ 300 ई. पू. से 300 ई. तक के गोल चैत्यगृह मिले है
- यहाँ से बौद्ध संस्कृति, महाभारत काल, महाजनपद काल, मौर्य काल, गुप्त काल, हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है।
- यहाँ के निवासी वस्त्र- बुनाई की तकनीक से परिचित थे

रैढ सभ्यता

- टोंक जिले की निवाई तहसील में ढील नदी के किनारे स्थित।
- लोहे के औजार अत्यधिक मिलने के कारण इसे प्राचीन राजस्थान का टाटानगर कहा जाता है।
- उत्खननकर्ता - 1938-40 में डॉ. केदारनाथ पूरी।
- 3075 आहत मुद्राएँ तथा 300 मालव जनपद के सिक्के प्राप्त हुए है।
  - ✓ मालव जनपद की लौह सामग्रियाँ भी मिली अंत: इसे मालव नगर भी कहा जाता है
  - ✓ यूनानी शासक अपोलोडोट्स का एक खंडित सिक्का भी प्राप्त हुआ है।
- मातृदेवी व शक्ति की मूर्तियों के अवशेष भी प्राप्त हुए है तथा पगड़ी पहनी स्त्री की मृणमूर्ति भी मिली है।
- विभिन्न आभूषण - कर्णफूल, हार, पायल आदि
- आलीशान इमारतों, मथुराकला और स्वस्तिक के अवशेष मिले है।
- अब तक का एशिया का सबसे बड़ा सिक्को का भण्डार भी मिला है ।

नगर सभ्यता - खेडा सभ्यता

- यह टोंक जिले में उणियारा कस्बे के पास स्थित है।
- अन्य नाम -कर्कोट नगर, मातव नगर।
- उत्खननकर्ता- 1943-44 में श्रीकृष्ण देव द्वारा।
- साक्ष्य
  - ✓ बड़ी संख्या में मालव सिक्के, गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति, मोदक रूप में गणेश का अंकन और कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा आदि प्राप्त हुए है।
  - ✓ लाल रंग के मृदभाड़ एवं अनाज भरने के कलात्मक मटकों के अवशेष भी प्राप्त हुए है ।
- वर्तमान में इसे खेडा सभ्यता के नाम से जाना जाता है।